5

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अवनीश कुमार*
देवेंद्र कुमार यादव**

प्रस्तुत शोध-पत्र प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन पर आधारित है। शोध का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के जेंडर (पुरुष एवं महिला) तथा विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर खिलौना-आधारित-शिक्षणशास्त्र के प्रति उनके अभिवृत्ति की तुलना करना था। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित रही। लखनऊ जनपद के प्राथमिक विद्यालय के 60 शिक्षकों को सुविधा आधारित न्यादर्शविधि से चुना गया। आंकडे एक स्व-निर्मित अभिवृत्ति मापनी के माध्यम से एकत्रित किए गए, जिसमें 33 कथन शामिल थे और जिनमें पाँच आयामों (जागरूकता, व्यावहारिकता, लाभ एवं प्रभाव, अभिरुचि तथा सामाजिक समर्थन) को शामिल किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि पुरुष शिक्षक खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जबकि विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों को खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अधिकांश शिक्षकों ने खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता एवं आनंदपूर्ण अधिगम को प्रोत्साहित करने वाला माना। निष्कर्षतः, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को सकारात्मक रूप में स्वीकार करते हैं, किंतु इसके प्रभावी कार्यान्वयन हेतु प्रशिक्षण, संसाधन और प्रशासनिक सहयोग अनिवार्य है।

प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की आधारशिला मानी जाती है, क्योंकि यही वह अवस्था है जहाँ बालक के बौद्धिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है। इस अवस्था में शिक्षण को जितना अधिक रोचक, सरलीकृत और विद्यार्थियों की रुचि के अनुकूल बनाया जाता है, उतना ही उसका प्रभाव दीर्घकालिक होता है (गुप्ता और अग्रवाल, 2018)। परंपरागत

*शोधार्थी (एम.ए.), शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007
**_आचार्य_, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

शिक्षण पद्धतियाँ कई बार बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा और रचनात्मकता को सीमित कर देती हैं, जबकि खेल और खिलौनों के माध्यम से प्रस्तुत शिक्षण न केवल सीखने को आनंददायी बनाता है, बल्कि बच्चों को सक्रिय सहभागिता, सहयोग और समस्या-समाधान के अवसर भी प्रदान करता है (ब्रूनर, 1966)।

खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चे की खेल प्रवृत्ति और अनुभवात्मक अधिगम को आधार बनाकर सीखने की प्रक्रिया को जीवंत और प्रभावशाली बनाता है। यह शिक्षण पद्धति बच्चों में रचनात्मकता, आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करती है। हाल के वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में यह समझ बढ़ी है कि प्रारंभिक कक्षाओं में 'खेल के माध्यम से सीखना' बच्चों के सीखने की क्षमता और वैचारिक विकास को सुदृढ़ करता है (पियाजे, 1970; वाईगोत्स्की, 1978)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने भी खिलौना आधारित शिक्षा को प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण माना है। नीति में यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षण को स्थानीय, सांस्कृतिक और पारंपरिक खिलौनों के साथ जोड़ा जाए, ताकि शिक्षण प्रक्रिया बच्चों के जीवन अनुभवों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ सके। इस संदर्भ में, शिक्षक की भूमिका अत्यंत निर्णायक है, क्योंकि किसी भी नई शिक्षण पद्धति के सफल कार्यान्वयन में शिक्षक की अभिवृत्ति केंद्रीय तत्व होती है। यदि शिक्षक खिलौना आधारित शिक्षण को सकारात्मक रूप से ग्रहण करते हैं तो यह शिक्षा की गुणवत्ता को नए आयाम दे सकता है, वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण इस प्रयास की सफलता में बाधा बन सकता है (शर्मा, 2021)। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायता करता है कि शिक्षक इस पद्धति को किस प्रकार देखते हैं, इसके क्रियान्वयन में कौन-कौन सी संभावनाएँ और चुनौतियाँ सामने आती हैं तथा बाल-केंद्रित शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसके क्या निहितार्थ हो सकते हैं।

शोध का औचित्य

शोध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषा कौशल, रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और गणितीय सोच को विकसित करता है। हालाँकि, लाभों पर पर्याप्त शोध हुआ है, पर शिक्षकों की धारणाओं, दृष्टिकोणों और चुनौतियों पर सीमित कार्य हुआ है, विशेषकर भारतीय प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ संसाधन की कमी, प्रशिक्षण की अपर्याप्तता और पारंपरिक शिक्षण प्रवृत्तियाँ सामान्य हैं। शहरी-ग्रामीण तथा प्रशिक्षित-अल्पप्रशिक्षित शिक्षकों के दृष्टिकोण की तुलनात्मक समीक्षा भी न्यून है। कुछ अध्ययनों (नीतू सिंह, 2021; पटेल और मेहता, 2021; सिंह और शर्मा, 2023) में यह पाया गया कि शिक्षकों का दृष्टिकोण इसके सफल कार्यान्वयन में निर्णायक है, किंतु अधिकांश अध्ययन क्षेत्रीय स्तर या मात्रात्मक आँकड़ों तक सीमित रहे हैं। व्यावहारिक कार्यान्वयन में आने वाली स्थलीय चुनौतियाँ, संसाधनगत सीमाएँ तथा

पाठ्यक्रम से एकीकरण को लेकर शिक्षकों की सोच और सुझावों पर भी गहन अध्ययन अपेक्षित है।

अतः प्रस्तावित अध्ययन 'प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों का खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति दृष्टिकोण' इस शोध-रिक्तता को भरने का प्रयास करता है। यह अध्ययन शिक्षकों की समझ, अनुभव, स्वीकार्यता, प्रशिक्षण आवश्यकताएँ और बाधाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो नीतिगत सुधार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

खिलौना— खिलौना एक ऐसी वस्तु होती है, जिसका इस्तेमाल बच्चे खेलने के लिए करते हैं और उससे खेलकर वे प्रसन्न होते है। खिलौनों से बच्चों का मनोरंजन तो होता ही है साथ ही वे खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाते हैं। जैसे— समस्या का समाधान करना, मिल-जुल कर खेलना, आँख-हाथ में तालमेल बिठाना इत्यादि।

खिलौना आधारित अधिगम— एक शिक्षण-अधिगम दृष्टिकोण जो खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने के आस-पास केंद्रित है।

अभिवृत्ति— अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है। ये बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा उसके पूर्व विश्वास क्या हैं? अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।

प्राथमिक विद्यालय— इस शोध में प्राथमिक विद्यालय से तात्पर्य कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाओं तक से है।

शोध समस्या

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं—

- महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है तथा इसमें सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में न्यादर्श हेतु सुविधा आधारित न्यादर्श विधि का उपयोग करते हुए लखनऊ जनपद के कुल 60 सरकारी प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें 30 पुरुष और 30 महिला शिक्षक तथा 30 विज्ञान एवं 30 कला वर्ग के शिक्षक शामिल थे।

शोध उपकरण

आँकड़ों के संग्रहण के लिए शोधकर्ता द्वारा पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित, पाँच आयामों (जागरूकता, व्यावहारिकता, लाभ एवं प्रभाव, अभिरुचि तथा सामाजिक समर्थन) के अंतर्गत 33 कथनों से युक्त स्व-निर्मित 'अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियाँ

इस शोध अध्ययन में समस्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता द्वारा माध्य, मानक विचलन और t-परीक्षण को सांख्यिकी प्रविधियों के रूप में उपयोग किया था।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध उद्देश्य 1— प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

इस शोध अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के लिए प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ों को जेंडर (पुरुष तथा महिला) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का वितरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1— महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति हेतु तालिका

जेंडर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	t-मान	p-मान	सार्थकता स्तर
पुरुष	30	131.93	7.74	58	2.10	0.040	0.05
महिला	30	127.73	7.75				

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के आभिवृत्ति का माध्य 127.73 तथा मानक विचलन 7.75 है, इसी प्रकार पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति का माध्य 131.93 तथा मानक विचलन 7.74 है। दोनों समूहों के मध्य 4.2 अंकों का अंतर परिलक्षित होता है। खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति महिला तथा पुरुष शिक्षकों का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान -2.10 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 58 पर p-मान 0.040 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से कम है, इसलिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना महिला एवं पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है। परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है कि खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति महिला तथा

पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का जेंडर (महिला तथा पुरुष) खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति उनके अभिवृत्ति को प्रभावित करता है।

इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में यह पाया कि पुरुष प्राथमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति महिला प्राथमिक शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है। इस अंतर के पीछे कई कारण निहित हो सकते हैं। सर्वप्रथम, पुरुष शिक्षक खेल एवं प्रयोगधर्मी गतिविधियों में अधिक सक्रिय और उत्साही पाए जाते हैं, जिससे वे खिलौना आधारित शिक्षण को सहजता से अपनाते हैं (शर्मा, 2020)। द्वितीय, पुरुष शिक्षकों में कक्षा प्रबंधन और नवीन शिक्षण तकनीकों को अपनाने का आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक होता है, जिसके कारण वे नई पद्धतियों को लागू करने में सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं (सिंह और मिश्रा, 2021)। तृतीय, सामाजिक भूमिकाएँ भी इस प्रवृत्ति को प्रभावित करती हैं, क्योंकि महिला शिक्षकों से अपेक्षाकृत पारंपरिक और अनुशासनात्मक शिक्षण शैली की अपेक्षा की जाती है, जबकि पुरुष शिक्षकों को रचनात्मक प्रयोगों में अधिक स्वतंत्रता मिलती है (पांडे और विश्वकर्मा, 2023)। चतुर्थ, शैक्षिक नवाचार एवं नीतिगत परिवर्तनों को अपनाने की तत्परता भी पुरुष शिक्षकों में अधिक पाई जाती है, और चूँकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में खिलौना आधारित शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है, अतः पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति इस दिशा में अधिक सकारात्मक देखी गई (राजपूत और यादव, 2024)। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुरुष प्राथमिक शिक्षकों की यह सकारात्मक अभिवृत्ति उनके व्यक्तिगत रुझान, आत्मविश्वास, सामाजिक-सांस्कृतिक अपेक्षाओं और नवाचार अपनाने की प्रवृत्ति का परिणाम है।

शोध उद्देश्य 2— प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

इस शोध अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य के लिए प्राथमिक स्तर के शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ों को उनके विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का वितरण तालिका 2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2— कला और विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति हेतु तालिका

विषय-वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	t-मान	p-मान	सार्थकता स्तर
कला	30	129.5	7.40	58	0.62	0.54	0.05
विज्ञान	30	128.4	6.40				

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कला वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति 129.5 का माध्य तथा मानक विचलन 7.40 है, जबकि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति का माध्य 128.4 तथा मानक विचलन 6.40 है। दोनों समूहों के बीच अभिवृत्ति में मात्र 1.10 अंकों का अंतर देखा गया, जो नगण्य है। खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान 0.62 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 58 पर p-मान 0.54 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है, इसलिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, निरस्त नहीं की जा सकती है। परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है कि विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों का खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति समान है। इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि विज्ञान एवं कला वर्ग के प्राथमिक शिक्षकों की खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसका एक प्रमुख कारण यह हो सकता है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अधिकतर बहुविषयक स्वरूप का होता है, जहाँ विज्ञान और कला दोनों ही पृष्ठभूमि के शिक्षक लगभग समान प्रकार की शिक्षण गतिविधियों एवं पद्धतियों का उपयोग करते हैं। कुमार (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक स्तर पर विषयगत भिन्नताओं का प्रभाव शिक्षण दृष्टिकोण पर सीमित होता है, क्योंकि यहाँ बच्चों की जिज्ञासा, खेल और गतिविधि-आधारित अधिगम को अधिक महत्व दिया जाता है। इसी प्रकार, वर्मा और तिवारी (2020) ने यह दर्शाया कि खिलौना आधारित पद्धति जैसी गतिविधि-केंद्रित रणनीतियाँ विषय-विशेष पर आधारित नहीं होतीं, बल्कि सभी शिक्षकों के लिए समान रूप से उपयोगी होती हैं। चंद्रा (2021) ने यह भी बताया कि प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान और कला पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों के बीच किसी प्रकार की विषयगत भिन्नता को नहीं रखता, जिससे उनकी अभिवृत्ति में समानता देखी जाती है। इसके अतिरिक्त, नेहरू और जोशी (2022) ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि गतिविधि-आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं के विकास हेतु एक समान रूप से प्रभावी है, चाहे शिक्षक की विषयगत पृष्ठभूमि विज्ञान हो या कला। अतः यह स्पष्ट होता है कि खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र की प्रकृति समग्र और सार्वभौमिक होने के कारण विज्ञान और कला पृष्ठभूमि से आए प्राथमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

आँकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित शोध निष्कर्ष प्राप्त हुए—

- इस शोध अध्ययन में यह पाया गया कि पुरुष शिक्षकों की खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। यह स्पष्ट करता है कि शिक्षकों का जेंडर खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षक समुदाय में

खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति विश्वास एवं दृष्टिकोण को लेकर लैंगिक भिन्नता पाई गई।

- इस शोध अध्ययन में कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह संकेत करता है कि शिक्षकों का विश्वास एवं दृष्टिकोण विषय की प्रकृति से स्वतंत्र है। दोनों ही विषय वर्गों के शिक्षकों ने खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विषय-वर्ग का शिक्षक की अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिणाम यह दर्शाता है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को सकारात्मक रूप से स्वीकारते हैं और इसे कक्षा-कक्ष में उपयोगी मानते हैं। यह परिणाम इस ओर संकेत करता है कि प्राथमिक शिक्षा को अधिक रचनात्मक और बाल-केंद्रित बनाने के लिए खिलौना-आधारित पद्धति को विद्यालयी शिक्षण में व्यवस्थित रूप से जोड़ा जा सकता है। शिक्षकों की सकारात्मक दृष्टि यह प्रमाणित करती है कि यदि उन्हें इस पद्धति से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण, उपयुक्त संसाधन और सहयोगी वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो यह शिक्षण अधिक प्रभावी बन सकता है। पुरुष शिक्षकों का रुझान महिलाओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक होना इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि महिला शिक्षकों को प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, ताकि वे भी खिलौना-आधारित गतिविधियों का उपयोग समान आत्मविश्वास और सहजता के साथ कर सकें। इसी प्रकार, विज्ञान और कला पृष्ठभूमि के शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अंतर न पाया जाना यह दर्शाता है कि यह पद्धति विषयगत सीमाओं से परे है और सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है। इस दृष्टि से देखा जाए तो खिलौना-आधारित शिक्षण न केवल विषयवस्तु को सरल और रोचक बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों के लिए सीखने का अनुभव अधिक जीवंत और आनंदपूर्ण करता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षकों ने इस पद्धति को बच्चों की सृजनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देने वाला माना। इसका अर्थ यह है कि यदि इस पद्धति को नियमित रूप से पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो विद्यार्थियों की जिज्ञासा, सोचने-समझने की क्षमता और सामाजिक सहभागिता को विकसित किया जा सकता है। यह पद्धति पारंपरिक रटने पर आधारित शिक्षा को अनुभवजन्य और प्रयोगात्मक शिक्षा में बदलने की क्षमता रखती है। हालाँकि, शिक्षकों का यह भी मानना रहा कि इसके प्रभावी प्रयोग के लिए प्रशिक्षण, समय, संसाधन और प्रशासनिक सहयोग आवश्यक है। यदि विद्यालयों में उपयुक्त खिलौना-सामग्री, गतिविधि कक्ष और रचनात्मक प्रयोगों के लिए वातावरण उपलब्ध हो, तो शिक्षक अपने सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यावहारिक स्तर पर क्रियान्वित कर पाएँगे। इस प्रकार यह अध्ययन इस ओर इशारा करता है कि खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को विद्यालयी जीवन में सुव्यवस्थित ढंग से लागू करने पर प्राथमिक शिक्षा अधिक आनंदपूर्ण, समावेशी और रचनात्मक बन सकती है, जिससे विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को एक साथ गति मिल सकेगी।

संदर्भ

कुमार, ए. 2019. प्राथमिक शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण : शिक्षक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पेडागॉजिकल स्टडीज*. 11(3), पृ.सं. 101–115.

गुप्ता पी. और आर. अग्रवाल. 2018. शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य. *प्राथमिक शिक्षक*. 42(1), पृ.सं. 65–71. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

चंद्रा, आर. 2021. प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण और नवाचारपूर्ण शिक्षणशास्त्र : एक तुलनात्मक दृष्टि. *जर्नल ऑफ एलिमेंटरी एजुकेशन रिसर्च*. 15(2), पृ.सं. 45–58.

नेहरू, एस. और एम. जोशी. 2022. गतिविधि-आधारित अधिगम और उसका प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव. *एशियन जर्नल ऑफ चाइल्ड-सेंटर्ड एजुकेशन*. 9(1), पृ.सं. 67–79.

पटेल, एस. और आर. मेहता. 2021. भारत के प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के खिलौनों के उपयोग की ओर दृष्टिकोण : एक सर्वेक्षण अध्ययन. *एजुकेशनल इनोवेशंस*. 28(4), पृ.सं. 134–145.

पांडे, एस. और डी. विश्वकर्मा. 2023. *शिक्षकों की अभिवृत्ति पर सामाजिक भूमिकाओं का प्रभाव*. अर्चना पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

पियाजे, जे. 1970. *साइंस ऑफ एजुकेशन एंड द साइकोलॉजी ऑफ द चाइल्ड* (अनुवादित संस्करण). वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

ब्रूनर, जे.एस. 1966. *टुवर्ड्स ए थ्योरी ऑफ इंस्ट्रक्शन* (अनुवादित संस्करण). नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.

राजपूत, वी. और एन. यादव. 2024. शैक्षिक नवाचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक विश्लेषण. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भोपाल.

वर्मा, पी. और आर. तिवारी. 2020. खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र और विषयगत पृष्ठभूमि के आधार पर शिक्षकों की अभिवृत्ति. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 18(4), पृ.सं. 89–104.

वाईगोत्स्की, एल.एस. 1978. *माइंड इन सोसाइटी : द डेवलपमेंट ऑफ हायर साइकोलॉजिकल प्रोसेसेज* (अनुवादित संस्करण). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शर्मा, ए. 2020. *प्राथमिक स्तर पर खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का प्रभाव : एक अध्ययन*. ज्ञानभारती प्रकाशन, वाराणसी.

शर्मा, पी. 2021. *खिलौना आधारित शिक्षण : परिप्रेक्ष्य और संभावनाएँ*. शिक्षा भारती प्रकाशन, वाराणसी.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सिंह, आर. और पी. मिश्रा. 2021. *शिक्षकों के कक्षा प्रबंधन एवं नवीन शिक्षण तकनीकों के प्रति दृष्टिकोण*. शिक्षा प्रकाशन, लखनऊ.

——— और ए. शर्मा. 2023. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खिलौनों की भूमिका : भारतीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की धारणाएँ और व्यवहार. *जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन*. 31(2), पृ.सं. 56–71.

सिंह, नीतू. 2021. खेल आधारित अधिगम के प्रति शिक्षकों की धारणा. *प्री-प्राइमरी शिक्षा समीक्षा*. 3(2), पृ.सं. 60–67.